डॉ. सुब्रत को ठगने वाले.....

पेज एक का शेष

6371341089 से कॉल आई। खुद को इंडियन आर्मी का अकाउंटेंट बताते हुए संवाददाता से उसका गूगल पे यूपीआई मांगा। काल करने वाले ने बताया कि पहले पांच माह का किराया यूपीआई के माध्यम से फ्लैट मालिक के बैंक अकाउंट में भेजा जाएगा, बाकी का किराया फौजी के वहां पहुंचने पर दिया जाएगा। इसके बाद उसने संवाददाता को गूगल पे पर बैंक ट्रांसफर टैब पर क्लिक करने को कहा। बता दें कि इस टैब के जरिए गूगल पे अकाउंट से किसी दूसरे बैंक अकाउंट में धन ट्रांसफर किया जाता है।

पेज खुलने पर अकाउंट नंबर में 50100620049605 और आईएफएससी कोड में एचडीएफसी00000677 और अकाउंट होल्डर में संवाददाता को अपना नाम भरने को कहा। बताते चलें कि डॉ. सुब्रत को भी गूगल पे पर यही नंबर भरने को कहा गया था। इस खाते को आर्मी मर्चेंट खाता बताते हुए इसमें एक रुपये डालने को कहा। उसे बताया गया कि खाते में एक रुपया भेज दिया गया है।

इसके साथ ही पंकज कुमार पासवान नाम के अकाउंट जिसका यूपीआई 7546015118@पेटीएम से संवाददाता के खाते में एक रुपया आया। कॉल करने वाले ने बताया कि संवाददाता को आर्मी के खाते से एक रुपया मिल गया है। इसके बाद उस खाते में पांच महीने की किराए की रकम यानी 50 हजार रुपये भर यही प्रक्रिया दोहराने को कहा गया। डॉ. सुब्रत ने यह प्रक्रिया दोहराई थी और उनके अकाउंट से ठग के खाते में रुपये चले गए। संवाददाता ने ठग को बताया कि ट्रांजेक्शन फेल हो गया क्योंकि खाते में धन नहीं है। इस पर ठग ने कहा कि उसके खाते से पचास हजार रुपये कट गया है और प्रोसेस पेंडिंग दिखा रहा है जल्दी से पचास हजार रुपये भर पे बटन क्लिक करो तभी तुम्हारे खाते में धन आएगा। डॉ. सुब्रत ने स्वीकार किया कि ठग ने उन्हें भी इसी तरह का झांसा देकर अलग अलग बैंक अकाउंट के जरिए उनसे नौ बार में करीब 1.90 लाख रुपये ऐंठ लिए। इन सक्रिय ठगों तक पहुंचना तो इन पुलिसिया ठगों के बस की बात है नहीं परंतु अपनी उगाही के लिए जिसे चाहे अपनी मर्जी से उठा लाते हैं और उगाही कर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर लेते हैं।

पहले भी एक युवक की जान ले चुकी है यही बसंत एंड कंपनी

उस घटना में पीड़ित परिवार ने एसएचओ बसंत सहित अन्य पुलिस कर्मियों पर लगाए थे 70 हजार रुपये ऐंठने के आरोप

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) सैकुल की हत्या के आरोपी एसएचओ बसंत और एसआई राजेश कुमार के खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई होगी इसकी उम्मीद नहीं है। जून 2021 में इसी साइबर थाने में बसंत कुमार और राजेश कुमार की मौजूदगी में हिरासत के दौरान नूंह निवासी जुनैद की मौत हुई थी। उस मामले में भी इन दोनों सहित साइबर थाने के 12 पुलिस कर्मियों के खिलाफ हत्या का केस दर्ज किया गया था। बसंत कुमार को इसी साइबर थाने का एसएचओ बने रहने और राजेश कुमार को इसी थाने में एसआई बने रहने का इनाम दिया गया।

नूंह निवासी जुनैद को भी साइबर थाना पुलिस ने कथित 80 हजार रुपये की धोखाधड़ी के केस में 31 मई 2021 को उठा लिया था। मां खतीजा ने आरोप लगाया था कि हिरासत में जुनैद को बुरी तरह पीटा गया। पुलिस ने जुनैद को छोड़ने के एवज में 70 हजार रुपये वसूले और कुछ सादे कागजों पर दस्तखत करा कर जुनैद को परिवार वालों के सुपुर्द कर दिया। इस दौरान जुनैद की हालत खराब हुई और इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। खतीजा की तहरीर पर नूंह के बिछोर थाने में एसएचओ साइबर थाना इंस्पेक्टर बसंत कुमार, एसआई राजेश कुमार सहित 12 पुलिस कर्मियों के खिलाफ हत्या का केस दर्ज किया गया था। इस मामले में मौत के कारण स्पष्ट नहीं होने के कारण जांच अधर में लटकी है। सैकुल के साथ भी वही कुछ हुआ जो कि जुनैद के साथ हुआ था। पोस्टमार्टम में मौत का कारण स्पष्ट नहीं होने की वजह से विसरा सुरक्षित किया गया है। यानी अब हिरासत में हत्या के मामले की जांच आरोपी बसंत कुमार, राजेश कुमार और उसके साथी स्टाफ के ही पुलिसकर्मी करेंगे, ऐसे में उनका निर्दोष साबित होना कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी।

Paytm
MM
Majdoor Morcha
UPI ID: 8851091460@paytm
8851091460
Scan this QR or send money to 8851091460 from any app. Money will reach in Majdoor Morcha's bank account.

केवल पाठकों के दम पर चलने वाले इस अखबार को सहयोग देकर अपनी आवाज को बुलंद रखें।

मज़दूर मोर्चा- खाता संख्या- 451102010004150

IFSC Code : UBIN0545112

Union Bank of India, Sector-7, Faridabad

बड़खल गांव के साथ सरकार के अन्यायपूर्ण बर्ताव के विरुद्ध अनिश्चितकालीन धरना

क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा

क्या कोई सोच सकता है कि किसी रिहायशी कॉलोनी में, सीवर लाइन डालने के लिए सारे रास्तों को खोद डाला गया हो, और 6 साल से, वे रास्ते ऐसे ही खुदे पड़े हों, सीवर लाइन भी ऐसे ही आधी-अधूरी पड़ी हो, लोगों का जीवन दूभर हो रहा हो? बड़खल गांव में रहने वाले 15,000 लोग ये अन्याय, झेल रहे हैं। फ़रीदाबाद नगर निगम और स्थानीय विधायक-सांसद, जब, गांव वासियों की गुहार सुनने को तैयार नहीं हुए, तो उनका धैर्य जवाब दे गया। 23 जुलाई से, बड़खल गाँव के सैकड़ों स्त्री-पुरुष, बड़खल झील चौक पर, अनिश्चितकालीन धरने पर बैठ गए। गांव वालों का कहना है कि जब तक गांव के रास्ते दुरुस्त नहीं होते और सभी मूलभूत सुविधाएं, जिनके वे हक़दार हैं, बहाल नहीं होतीं, उनका धरना जारी रहेगा।

लोगों को हिन्दू-मुस्लिम में बांटकर, अपना चुनावी उल्लू सीधा करने के मंसूबे पालने वालों को एक बार धरना-स्थल पर ज़रूर जाकर देखना चाहिए। गांव वाले इस खेल को अच्छी तरह समझ गए हैं, उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम में बंटना बंद कर दिया है। बड़खल गाँव वासियों ने उन्हें करारा जवाब दिया है। फ़रीदाबाद की एक वक़्त की शान और पहचान, बड़खल झील के किनारे बसा ये गांव, 1980 में नगर निगम में शामिल हुआ था। 'स्मार्ट सिटी' फ़रीदाबाद की हक़ीक़त अगर जाननी है तो, बड़खल गाँव से बेहतर उदहारण नहीं मिल सकता।

सड़कों का ये हाल है कि जाने कितनी बाइक, गड्ढों के साथ ताल-मेल ना बिठा पाने की वजह से टूट गईं। हर रोज़ कोई न कोई गांव वाला या गांव की यात्रा करने वाला ज़ख़्मी होता है, हड्डियां टूटती हैं। सीवर की लाइन टूटी पड़ी हैं। गंदगी, सड़क पर और सड़क से घरों के अंदर तक, पसरी रहती है। हर तरफ़ गंदगी का अम्बार नजर आता है। पूरे साल, गड्ढों में भरे गंदे पानी से, माहौल मच्छरों के लिए मुफ़ीद बना रहता है। तरह-तरह की बीमारियां बच्चों को हर वक़्त घेरे रहती हैं और गांव में कोई डिस्पेंसरी नहीं है।

गांव का एक मात्र सरकारी स्कूल, सड़क से 3 फीट नीचे है। बरसात के पूरे सीजन, वह स्कूल, बच्चों की पहुंच से बाहर रहता है। गांव वालों का कहना है कि जो रिश्तेदार, उनके घर एक बार आ जाता है, दुबारा लौट कर नहीं आता। उनके लड़कों के रिश्ते होने बंद हो गए हैं। कौन होगा, जो अपनी लड़की को ऐसे गंदे, बीमार गांव में ब्याहेगा? गांव में न कोई सामुदायिक केंद्र है और ना बारात घर। 'आपके गांव में विकास कार्य 90 प्रतिशत पूरे हो चुके हैं' स्थानीय विधायक सीमा त्रिखा के इस बयान ने, न सिर्फ़ उनकी संवेदनहीनता और गैरज़िम्मेदारी रेखांकित की है, बल्कि लोगों को आंदोलन का रास्ता ग्रहण करने को भी प्रेरित किया है। 'भाजपा के इस मग़रूरपने का जवाब, आगामी चुनावों में दिया जाएगा', धरना स्थल पर मौजूद लोग एक स्वर में बोल रहे हैं। 'हम उन्हें ज़रूर बताएंगे, 90 प्रतिशत 'विकास कार्य' पूरा होने का क्या मतलब होता है?'

'क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा', बड़खल गांव के निवासियों की इंसाफ की इस लड़ाई में डटकर उनके साथ है। 'हम आपके संघर्ष में आखिर तक साथ रहेंगे। धरने को और व्यापक बनाया जाना चाहिए। बड़खल गाँव से, नगर निगम आयुक्त कार्यालय तक पैदल मोर्चा ले जाकर, वहां आक्रोश सभा आयोजित की जानी चाहिए। प्रदेश की खट्टर सरकार ने मज़दूर बस्तियों पर एक तरह का हमला बोला हुआ है। हमने देखा कि अरावली पर अतिक्रमण हटाने के नाम पर, हजारों लोगों की खोरी बस्ती उजाड़ दी गई लेकिन अमीरों की आरामगाहों, बैंक्वेट हालों, शराब के अनगिनत ठेकों और शिक्षा की मंहगी चमचमाती दुकानों को छुआ तक नहीं गया बल्कि हरियाणा सरकार ने बेशर्मी से, सुप्रीम कोर्ट में, उन्हें ढहने से बचाया। सरकार, ग़रीबों की जेबों से हर महीने 1.8 लाख करोड़ जीएसटी वसूल कर, उसे अमीरों की बस्तियां चमकाने और सरमाएदारों को रियायतें देने में लुटा रही है', 25 जुलाई को धरने को संबोधित करते हुए, क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा के महासचिव कॉमरेड सत्यवीर सिंह ने कहा।

इसे कहते है बुलंद इरादे : भारी बारिश होने के बाद भी बड़खल वासी लगातार धरना दे रहे हैं

बड़खल निवासियों ने, 5 अगस्त 2018 में भी, 'बड़खल सेवा समिति' बनाकर, बुनियादी समस्याओं के समाधान के लिए धरना आयोजित किया था. "इन समस्याओं के बारे में सही समझदारी हासिल करने के लिए हमें अपने अतीत की ओर देखना होगा। जितने भी सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक चिन्तक/ कार्यकर्ता थे, उनके विचारों को जानना पड़ेगा। इसके साथ-साथ हमें अपने आस-पास के गांव के दोस्तों से भी संपर्क करना होगा जो इन्हीं समस्याओं से रोज़-रोज़ जूझ रहे हैं, ताकि इन मुद्दों पर हम सभी एकजुट हो सकें। इस नारकीय ज़िन्दगी से निजात पाने के लिए, इस मुहीम में शामिल हों।" उस वक़्त जारी हुए पर्चे की ये सीख, आज भी उतनी ही सार्थक और मौजूं है।

नागरिक, संवैधानिक अधिकार और मूलभूत नागरिक सुविधाओं को भी आज, जात-धर्म के झगड़े भूलकर, एक-दूसरे के दु:ख-दर्द को महसूस करते हुए, इकट्ठे होकर संघर्षों के द्वारा ही हासिल किया जा सकता ह। वर्ना 'विकास' के नाम पर सरकार हमारा जीना दूभर कर सकती है। 6 साल पहले, जब ये सीवर लाइन बिछाने के नाम पर सड़कें नहीं खुदी थीं, तब बड़खल गांव के रास्ते, इतने ख़राब नहीं थे। ऐसा 'विकास' हुआ कि जीवन नर्क बन गया।

जागरूक नागरिकों की पहल क़ाबिल-ए-तारीफ़ है, जिसे महानगर के सभी अमन-पसंद और जागरूक लोगों का भरपूर समर्थन मिल रहा है। बड़ी तादाद में लोग, आंदोलनकारियों का हौसला बढ़ाने, हर रोज़, धरना-स्थल पहुंच रहे हैं और जन-सरोकार रखने वाला स्थानीय मीडिया, इस धरने को अच्छी तरह कवर कर रहा है। ऐतिहासिक किसान आंदोलन एक मिसाल के तौर पर हमारे सामने मौजूद है। जन-आंदोलनों की प्रचंड लहर ही, मौजूदा मग़रूर निज़ाम को सीधा कर सकती है। जन-शक्ति से ताक़तवर कुछ भी नहीं।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लबगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
6. सुरेन्द्र बघेल-बस अड्डा होडल - 9991742421